

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ५ / १७२ (१०२)

ग्रंथ नाम पट मुख्यलक्षण.  
नाम भास्मा.

विषय मराठी काव्य.



A circular watermark is overlaid on the portrait, containing the text:  
इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.  
जोड़ी प्रोजेक्ट ऑफ राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

०६.०१.८२

१९८१५९६२ अ२८८

✓  
कोड

ज्येष्ठ २७२१ मुख्यमंत्री  
राजवडे



त्रीयाश्रोत्रीयाच्युत्तुना। ये १०

हिपरेसिलिंग। ११। मागलीया  
खांपीनेदातीया। मांदाईयका  
उपेहीतया। समाग्याव्याणों  
नीढ़स्तीनीया। मेती। १२। र  
तरतालीषि ॥ १३। अवेतभुपा  
चाभुपती। ये ॥ १४। कृत्तासमर  
संधुतिं ब्रवण। सक्रीनमीला। १५  
उसील्लरा। नवेष्टव। समान  
गोस्तुहदभावः। सखापाठी  
श्रीवः भणगाम्भणं गस्त  
ग्रां। १६। मनुशालोकीलन्म



The Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan  
District Library, Mumbai  
Joint Project of

माजना॑ न कृष्ण॒ ये भयोत्तुं ना॑  
ये संमासीया॑ भना॑ वित्पा॑  
भानुं ले॑ ॥१८॥ दग्धि द्वया॑ धै॑  
क्षदेवतन पेनी॑ ॥ परित्तुं दोळ  
सये के गुणी॑ ॥ सुमित्र॑ कुमीत्रामि॑  
नांणी॑ ॥ पारखुजा॑ णनी॑ वाहु॑ ॥१९॥  
आववा॑ छना॑ भरिलं लछेग सु॑  
नलनुवोपि॑ ॥ हृष्टिकृष्टै॑ ॥ पा॑  
जवन सतो॑ गहृदया॑ छंग या॑ ति॑  
हरिजदिन॑ ॥२०॥ गुणामा॑

ज्ञाये॑ दायुगुं॑ शरण॑ उत्तो॑  
द्वृग्नि॑ रमण ॥ ग्रहं दृक्षेषु॑  
शक्तिं भीष्मा॑ भाजी॑ लुं॑ तोसा॑ ॥२१॥  
गुणै॑ वन्दृती॑ दशता॑ अुं॑ सत्॑ पै॑  
हृत्ता॑ मागुता॑ उदारमा॑ वरस्य  
सत्ता॑ तोये॑ कडलं॑ मध्ये॑ त्रीया॑  
॥२२॥ क्षेत्री॑ वन्नी॑ रत्तेज्ज्या॑ धै॑  
च सु॑ पक्षा॑ येना॑ धै॑ पागका॑  
पण्यै॑ इस्त्वा॑ रिखा॑ वीर्य  
धं॑ मध्ये॑ त्रीजाणा॑ वा॑  
रेन पाचा॑ रितो॑ येण

नां बैदु वै लिपेण सा  
त त्राहा धो राशी ठा  
मुहान्ति ॥ ८४ ॥ कार  
वाटवैष्णवग्ये स्वयनि  
नताहुणेभीं इत्युपरामा  
सियाधम पुरुद्गु ॥ ये से सराते  
बोलति ॥ ८५ ॥ युरमुपाळन है  
साधा यत्यानकीजे नुव्वदोधु  
मुंखेवैलक्षणीं दानुवादु पक्षा  
णप्रस्तवपाकवाम ॥ ८६ ॥ हुपद  
महेद्वेषाचार्य ॥ करणेन तव  
गेये अप्पे अप्पे अप्पे अप्पे

पुरुषपावे  
थवाजपेस्तु  
प्रारब्धों ॥ ८७ ॥ मकाळ  
हांणी ॥ यत्यावीशादकाये साम  
नी ॥ तोशालभेषरदुशणि ॥ ची  
तनधठीजाणसा ॥ ८८ ॥ सहजई  
ज्ञेमानस ॥ तेथी वो उवडै वै  
वो उच्छों ॥ तरीतेन धोनावडै  
को ॥ झुणेकाणसांगपा ॥ ८९  
अस्त्रलक्ष्मीतो सिधान्तु ॥ ९० ॥  
द्वार त्यासंप्रदासेपध्याहृस्य  
॥ ९१ ॥ रवीन्द्रारहित उपहृशी

२८० (५)

नक्षत्रां लै पठ० ॥ उगां लै कु  
स्य वाश्चेषोणं सम्भव  
प्रभाधिकरणे उपेशा  
कुल्यां पृष्ठां पृष्ठा ॥ ध्यात्वा काया  
पुळा ॥ ३७ ॥ वैरिथोरपथवा  
सानापया सिलगोणे सावधा  
ना काळसरका हुतारानी वा  
टुप्पासद्भानावरो ॥ ३८ ॥ के  
युखुपलव्यासनां नये नीगके  
टुभदलाष्टासंनात्पे रंगिः  
ओमश्चौक लिङ्गपीपि

जी॥ तोयकाणा सुक्षयपा  
हिलयावीणा उगाची देवीजो  
हुडांण गुणसागंलाओ व  
गुणापा हुतोपठन मुखवे ॥ ३९ ॥  
कुक्षणोपेकुनीमनीर्वीटोगमद्य  
करेखटखटा नीतीनायके  
जी॥ तायेक ॥ ४० ॥ जांणपणभरी  
कांगायांलक्षोधनसावरो ॥  
अर ग्रावदा गसियातंरपडेप  
द्युर ॥ ४१ ॥ वलकायाधिकां रेवीण  
वग गुवाचाकहे सिणपावचन



जयन्तेकरिंगां॥१॥ ओताव  
दशुलपणों॥ वग्नुत्तरसेष्या  
दुणों॥ वचाकमणात्तेमीगु  
तो॥ १३॥ दोशटेवीमुढीलों  
कालेंगीस्थयेष्यापणापांसि॥  
येसेनकछेजया सिनापेका।  
मिलाभाभ्यासस्तेनीगुणों॥  
सकूकवीद्याजाणों॥ जनों  
सेनोंवंतनेपो॥ लोयेका॥ १४॥  
हंस्तीबोंधिजेउणेतेंतों॥ कृ  
लोभेभयभयरातेः धेसा  
ओप्रपंतो॥ लागेका॥ १५॥

रसायाटवता॥ १॥ सर्पी॥ सिनों  
हिंस्त्रहस्तायाध्रासेनंहि  
गोहस्ता॥ चार्यसिनोंहित्रहु  
स्ताहेनोधरोजाणपां॥ १६॥  
मार्गनोचरवक्षुहेनां॥ नकेके  
दिवाकउतिकवणाजांधिये  
पुरशालक्षणंग॥ उभयेलो  
झींनहरवों॥ १७॥ अस्त्वजांपती  
अस्त्रखणां॥ हंडिष्यासतंस्त्रि  
हस्तस्मरणायापायेकांले  
संकटहरणाउपायरचेष्यापे  
सां॥ १८॥ संकटस्त्रमावास्त्र

स्मरण। साम्सित क्रिक्षु गुरुद  
हनि। गुरु हठी नं समाधाना।  
जाप हावाट सं पद्मा अर्थे  
दां भी कमल नात्या पसाना आ  
दरउ पर्जन वीना रिन नां आंत  
पीभ हादा त्यात्या शमा तोये  
कूलाणे ईस्यु ना। अर्था वेत्ते  
दात्या पवीत्र त्याना प्रगट रहे  
सेवा लिसु हरा कांवे होत्या मु  
रव शुंगा राजु लिपि इकांमी कल

बचवनारा... उक्त गुरुद्विती  
सर्विया गात्या मवा को रवहना  
गारत्या सो अवर्को को रत्नभाव भा  
जासा। अर्था अद्या अद्या गसि ल  
ढोका। धैनु फुरवा क्लीने जन  
श्रिवा फणा ग्रीवा उनीयो ठहर  
कों सपरवेळवी मंडका लो। अर्थ  
येकाबा धैयेकापारि। नारा देव  
जे प्रसाद देवसा। येत्रु सुलो को म्पे  
येना द्विटा कोण अस्तु रवास

नेम्नमवीरप्रातिपादिक्षेण। गद्य  
 मंत्रालेतुपदसिव्वासंकटिप्राणा  
 ते रक्षोल्लाप्याणीपास्तेलंदाभि  
 श्वी॥४॥ जक्तंतामारिवलेवस्या  
 नर्गिष्वाबुउतांतारिलेमहापुरी  
 सातेवीसरेताप्याधीरिषा। न  
 रकीप्तेहुगास्ता॥५॥ पृष्ठत  
 धृदोद्दांहाराभरिताप्यापुल्य  
 कोण्डिकुकास्तेहताभंवरितप  
 तीपंद्विहस्तातंवरितपर  
 द्वरंविष्वा॥६॥ अनीतिम


Portrait of a man with a white turban and a mustache, enclosed in a circular frame.
Rajawade Sansodhan Mandal, Dhule and the  
Mantra of Shri Mantra Chavai Bhawan, Mumbai
(7)
 प्राणिगाप्त अथवा हुगु  
 जियायालगिमान्यसवालोप  
 ससज्जेणीसहनेसिव्वातेषेजी  
 कीठेवीस्वसक्त्वा। योस्तियगुणी  
 सवकुराक्षपम्हणुनीवंद्यविस्पा  
 ते॥८॥ सवमुतिसमानद  
 यानीषरनभरकारितिलय  
 येस्तियेगुणीभूशीलकादा। मु  
 णुनीप्रीयदवाता॥९॥ अनेको  
 तेवहुलवरमें। अयमनिलेमा  
 श्वीयेजीवेमधिनेसकटिरक्षावे  
 ल्यालाधोस्वंडेमागिलवीक्षा

दंठकीजे दुत्योता ॥४॥ जया  
साक्षोप्रमहारुद्याक्षिण्डपा  
वैसवीसुरद्भूमोक्तोपरिधौस्मि  
धीपायेषुक्तिकाभासिरकाले  
स्वद्विदा ॥५॥ कुम्भिलपुरशा  
उद्देश्याकरित्वाविदशाहा  
इठेनाश्याधातुराहोत्तीया  
परिसुस्पर्शकरित्तेजाण  
तेऽप्यावोक्तरवनीयामनाक  
मगवार्तिल रामको ॥६॥  
सांगणेऽप्यावोक्तरवनवेष  
दानीभायाप्यावोक्तसत्यपां  
चेकांताः गुरुप्रसिद्धाधीक  
माताप्रेदशांश्चिवोऽलेजो ॥७॥  
सद्गुरुलिकाक्षयमंकास्मद्  
णेतंरिसंसानपानुग्रहायि  
नोनीष्याधान् भुक्तस्पृष्टा  
नुवादेऽप्यावोक्तनीनासिलभा  
गीवनिहां मेत्रीविनोदी  
विशादकाधानेवीष्यात्रुत्प्रसिद्धि  
साखाधारवंडमागेलवीज्ञा



The Relavade Sanskrit Mandal, Dhule and the  
Chavaprasitha Mandal,  
John Peter of "John Peter Chavaprasitha, Mandibari"

रुद्रमहायेत्ययनीर्धा<sup>(9)</sup>तुते  
 मुंजमिहोपदीयासुरवा  
 चामांतुतोदधिा। आगत्ती  
 सर्वेषांटेनाा। एका। मवाक्ष  
 आगती हरलक्ष्मी॥ महणुनेसपा  
 चीवाक्षेक्षाग्रेहसग्रेहताको  
 लुक्ष्मी॥ मृत्याम्बिदरवाण्वि॥ एक  
 ज्ञेसप्रियेष्यापुष्टिकाया। लेसि  
 मुतमात्रीदंया। वीवेकवीत्यार  
 सयन्मारा याऽस्त्वानवीसं

दो। एका। तां। तस्त्वायेक  
 हरेननंभकररक्षा। लेवीनी  
 जरांत्यापक्षापराभवज्ञाने  
 नें॥ एक रात्रुवधुनिसर्वधारेन।  
 अर्जुन। भागीरासिपेक्षद्वी  
 छस्यनामसमरतांवगत्री।  
 होयेसायेज्यपपिया। एक  
 देशीपरिहारदेवरुणा। क्र  
 मह्ययरेशीत्ययानुणामसे  
 लतीनेपितुरुणा। उत्तीण  
 सज्जाणीज्ञा। एक। वोउवल्लभ



"The Rajajivade Sansodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Peeth, Mumbai."  
 "Joint Project of the Rajajivade Sansodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Peeth, Mumbai."

१०३  
पेक्षमरणाउरेनेणेउरवृ  
जेम्रमणा॥ मोहवांगीकारि  
लानीधनायासंधातवोले  
जे॥ १०४ संकटवोउवृत्यादातु  
णा। श्रस्तासिप्लावेशरण॥ नेत्र  
सेवीतांजधनया॥ यठांचनश्चरदा  
ते॥ १०५ जंवव्यापायेस्पश्चिनको  
जो॥ तंवक्षीतायेतीसिष्टला॥  
बानथमादक्तमाहोइलो। महा  
मेतुथेयत्या॥ १०६। सांपरस्मा  
वंडिपंक्री॥ नुवुरुतांभाहा

१०७  
समुद्रिं। यकळारुरुहुवीरा।  
नानाश्रीरामारिजा॥ १०८। त्रुपे  
वधीतांबकाकारिरो॥ वीजनीप्रां  
णधेतत्योरि॥ रागेष्याउवील्या  
देशात्तीराद्वयहेनयेकछा॥ १०९  
मुरवेनभावीतकुणांधैयद  
हेवोपिमरणां॥ तोषासृस्यग  
मुवत्तापोवेसामयात्ती॥ ११०  
पुर्वपुण्यव्यासव्यागांटिए॥ इस्प  
रत्युत्त्येहुपाद्रिस्टी। प्रच्छमे  
होनासवृत्तुरस्टी॥ लेथेवत्परित्ति

समागम्या ॥७३॥ महार्जिविंदुर्  
तानौकामा तेष्ये गहनं करक्षीये  
ज्ञा। ब्रह्माद्यमक्षीतां पावकाम  
तेष्ये गहनं च वीयेकातो ॥७४॥

दुकर्क्षेवांच्यवै दृष्ट्य गहना दा  
अभांगित राति प्राणा। तेस वी  
परेत जाति प्राणा। पुढाति  
मेटों मागुति ॥७५॥ येकस्ति  
नादना दरणः करितानाम  
नाम समरणा। मगवला मे  
जालो ह्याणा। हेम इमा

(11A)

ननामस्ति ॥ १ ॥ नामापासी  
नीद्युमुल्लेशुक्तो। नामापांसि  
घेश कोति ॥ नामापासि वीज  
येप्राप्ति। कर्मनीर्तुक्तिः ॥ हे  
देनामे ॥७६॥ नामापासि  
नीसुवति ॥ नामापांसि नीम  
शांति ॥ नामवणिजि सवर्मि  
ती। ब्रह्मप्राप्ति दुरिनामो ॥७७॥  
येकाजनादना दरणा ॥  
नामेपापि परम पावने  
नामेप्रपञ्च ब्रह्मपुणी ॥



"Joint Project of the Rajjavade Sanshodhak Mandal, Dhule and the Jawantrao Chavhan Pristishan Mumbai".

तां मते पृजा पापा परब्रह्म  
 ॥१०॥ छां हाग थोक का थे  
 कां हु। केल्या वेग छेहो ना  
 रुहिं करं दया सा वधा परहै।।  
 सद्व होसि॥ ॥ आले रिना  
 हि सा वधा नला॥ ये तटो शा  
 ना परला॥ सुख से तो शा  
 चिकातीः लेथे हैं चे॥ ३॥ कु  
 जुनी अा लस मसा वा॥ ये  
 तसाक पजाडा वा॥ दम्भिल  
 पृणाचा मोडा वा॥ यारा बचे  
 ॥११॥ भयं न गं दवता चेने  
 देका ग्राक गृह्यो न।।

हारे कथा न गं लेपा है  
 दो आशीरपनोपकार लावा  
 वो बहुतो सिकाया॥ सियावं॥ उ  
 गं पडो चोनेदावें॥ कोण होय  
 काचिं॥ प॥ बाडवेजा कस लेज  
 जावें॥ ये याशलया कामा सद्य  
 वो॥ मुदवचनेवो लतजा वें॥  
 प्राणि मात्रां गसि॥ ४॥ दुसर्या  
 चया दुस्तुं दुखवा वी॥ परसंते  
 शो सुखी वहा वो॥ प्राणि मात्रा  
 सीमी छउनी धसा वो॥ बज्या रा  
 देह॥ ५॥ बहुता चेष्टा न्या ये  
 इमावो॥ बहुता चेकार्यगाँ

# श्रीरामदासस्थानम्

# ଶ୍ରୀକୃତ୍ୟାନ୍ତିଷ୍ଠିତ

1980.8.28 by S. B. M.

၁၈၉၂၂၀၀

कृता वा ॥ या अप्युदया पूरस्कृ  
वं पारिखेजन ॥ २ ॥ दुसर्या च  
यां तरज्जाणा वे ॥ लदनुसार  
वली वेंग लोकां सीपरि क्षील  
जावे ॥ नाना परिश ॥ ३ ॥ नेमक  
चीबो ललडा ॥ ताका क्षमि

*ade Sanskrit, Mandai, Dhule and the Yashwantrao Ch*



प्रतीक्षयन् ॥ अदा पिना  
गासेन सार्वसमानुपां १७  
बालसभावभास्त्रदवजावा  
मेनउदंडम्येकभावादेशम  
द्येरनक्तावा काणीयकाच्चा  
१९ ना उलभपदापदुसन्धास  
दयावा इवदनीवडनीबोच्चा  
वासावधपणकरेलजावा  
संसारभापुला २० मरणाम्य  
स्मरणाया सावो हरिभक्ती  
सिसादरब्दोवं २१ मरानीकी  
त्तीसितरवावेगानाना प्रकारे  
२२ नेमकपणेवलेलिगला

तो बहुतासी कलो आला।  
 सवेष्या जीवी लया लाकाये  
 उण॥१७॥ ये सुत मनुष  
 वीरों राम नदा सिंच मुण्ड  
 वेपुरुशा जय चंपज नंज  
 गादि शा (त्रुत हो पा॥१८॥  
 स्वयं या पण करी लजा वी बहु  
 तां चेसा गिरजा वी गसी जानो  
 की तसीउ रवां वै॥ नानाम  
 का रो॥१९॥ की तीपि हतांस  
 खना हु सरव पा हुता कोति  
 ना हु वीसा रोग का रहिं  
 जांसु स म २१५॥ ये दु

  
 Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Pratishthan Mumbai

लया पुरुशा तें॥ जु बहु  
 लासि लु रवि करा वां परं लुक  
 रिकरि लजा ब्रो॥ हुता द्या रहे  
 क्रोया॥२२॥ हं पदर्प आपी  
 माने॥ क्रोधे अाखी कठी छ  
 कवने॥ हे अलान चीलहृषे  
 करगौवत गीते तबोली ले॥२३॥  
 क्रीजो उत मनुषो गोपाला॥  
 तो वी पुरुष माहा मला॥ की  
 तेलो करत याला शोधी न कीर  
 ती॥२४॥ कीये वीषा शब्दा  
 न॥ तेवी खाना वेव मन॥ प्र  
 लेते धेआ वलो करा॥ कहापी न करी

ती॥२७॥ मनापासुनीमंकिकरणे  
उत्तमयुणअगेस्थधरणे॥ मना  
माहांपुष्टाकारणे धुजीनवेती॒८२  
बहुवासै जाउल महालमसेन  
वायुनीकेण पुरवल्ला॥ पाका  
रणेबहुतोला॥ नाजिनारवा  
कें॒८३॥ जो सुकी भुत्तुभुध  
मनीः ईस्परभावनां संवासुनि  
॥ तोसर्वदावसेतीथी॥ तीथैव  
वसतीयासंगी॥ १॥ तीथैव  
सत्तातीथवासि॥ सत्तुनीस  
नीसुनीदेसिया॥ तीथैविसंता  
पुण्यठेद्वा॥ तीथैयेपेकाने  
दिती॒८४॥ गुरुहिंसा  
गुरुहिंसा  
पुण्यठुल॥ २॥ मनमा  
गाचाउपव्राहासा॥ तीथैसिया  
चाधेतीत्रासा॥ नीकटद्वद्वा  
साकरितीपृथु॥ कांसक्रोधठो  
कव्रया॥ स्पर्शनकरिष्याम्य  
काया॥ तोतीथवासिजांण  
नाया॥ तीथैपीयांवगदिती॥  
॥ ३॥ विस्तुस्मरणविवस्म  
रणानीसवसवीलेजयाचे  
वहना॥ ताचीतीथवासेजां  
जांतीथैचरणवहृहती॥  
तोनीसकल तीथैचिंधात्रा॥  
कीजौद्वितीप्रतीयाचाल



Rajmata Sanandha Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Research Institute, Mumbai

दोदकालागी पवी त्राप्ति तो  
साधा वो दबी तीर्था इहीं ये  
तेमांचा आसनी ॥ क्षमा धृ  
मसिसु वाणीगी। आहं कारज्य  
चीये रांनी ॥ संचरेनास  
वथा जा तीर्थी भिरु सुनी  
ईला रहीला। पतिग्रहान  
धूले हाना। येचा उपेसतो  
शमरेला। तो तीर्थुपाजा  
गावा ॥ १॥ परधनी आध  
वज्याचीयान येनां। परवि  
पोहता क्ली ॥ नमना आपरा  
तां तिला

पवारिद्युम्ना ॥ तोल  
नक्कांण तीर्थान्या ॥ २॥ तीर्थी  
आसुनी ईला रहीलः प-  
मन ईद्रियानी ग्रहकरीग  
तोग्रंहियास तोजा नहवी  
तीर्थी। तीर्थी भिरु सुनी  
आनान्यारी। तोको दक  
वासी। जाणावा ॥ ३॥  
सप्तासेकद्रुटवती। आत्ममा  
वंनासंवर्तमुलो। कोधधृ  
हिंकाशाती। तोसवतीर्थी  
ज्ञासेवीजे ॥ ४॥ सुबुध-



सिद्धवी स्यात् तीर्थे ॥  
 सुधसुमाल सर्वतो  
 था ॥ कुलगनारजयानी  
 शा ॥ पवीत्र होती ॥ जाण  
 मापा १२ ॥ धनाद्यनी दू  
 राजाणतीर्थः सेत्रीवा  
 जधारातिर्थ ॥ पापेपावृप  
 गंशानीर्थ ॥ प्रक्षाळनीष्या  
 घातो ॥ योगियाष्याम  
 दानलीर्थ ॥ असस्पनुपस्प  
 धेहोती अवणा ॥ दिक्खनव  
 हिनीर्थ ॥ होतीहरि

सतुपा १२ ॥ रोतनीरो  
 पणत्ययुक्तो जाणते  
 बाघवानणतोर्णिरप्रका  
 कीतानीर्थ ॥ मोक्षप्राप्तिः  
 नीर्धरो १२ ॥ तुरोस्यरे

माहाफँके  
 फँकायेस्ती ॥ तीयेस्ताफँकेती  
 भम्भानी ॥ वेदवाणीष्यानुवा  
 दो ॥ १८ ॥ तुरोस्यरे वेदवच्च  
 नीमाहाफँकेपूकायेस्ती  
 तीयेस्ताफँकेती भम्भानी



"Rajawade Sanskrut Mandal, Dhule and the  
 "Joint Project of  
 "Vaswantrao Chavan Pratishthan Mumbai"

वेदेवाणिष्टा नुवादा ॥५७  
 हृतायुग्मिति रूप पुरुष करा।  
 त्रेतायुगनी मीरा रण्य  
 पवीत्रादापासामाजिकु  
 तुक्षेत्रागंगा श्रेष्ठ कल्यु  
 गी॥१८॥ गंगाजान्हवेरवा  
 पारहोषस्थावेणीजबप्रवा  
 ग्निंगंगार्यातांर  
 नेमीरासे त्रैप७९१९१हा  
 हासहप्रम् निधा तुल  
 जीधालुनोकुकेताहालें॥  
 पुरुष करा चेन्नीभागदाला।

समानतापावृति ॥२०॥ दा  
 हास्त्रहृष्टवर्त्तेवर्गिपवास  
 करितांगंगातीस्तिपुरुष करा  
 माजियेकरनात्रि॥ वसन्तालौ  
 कपावीजे॥ २१॥



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)